आईना

-आचार्य श्री १०८ विमर्श सागर जी

आचार्य श्री विमर्शसागर जी द्वारा रचित
लगभग ५०० छन्दों में निबद्ध बहुचर्चित भजन

जीवन है पानी की बूँद

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे-ऽऽ
होनी-अनहोनी, हो-हो-२ कब क्या घट जाये रे-ऽऽ

साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा-लेटा
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा
ख्वाबों में तू क्यों, हो-हो-२ आनन्द मनाये रे-ऽऽ

अर्द्धमृतक समवृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न-सिकुड़न
गोदी में पोता-पोती, खोज रहा बचपन यौवन
बीते जीवन के, हो-हो-२ तू गीत सुनाय रे-ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी
बेटा बहु सोचें, हो-हो-२ डोकरो कब मर जाय रे-ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी-बेटा है
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है
भूखा प्यासा ही, हो-हो-२ इक दिन मर जाये रे-ऽऽ

जीवन बीता अरघट में, पुण्य-पाप की करवट में
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय में भी मरघट में
तेरा ही बेटा, हो-हो-२ तेरा कफन सजाये रे-ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है
लाड़ प्यार में पाला है, सुख की नींद सुलाया है
तेरा ही बेटा, हो-हो-२ तुझे आग लगाय रे-ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है
देहरी से बाहर, हो-हो-२ वो साथ न जाये रे-ऽऽ

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे-ऽऽ
होनी-अनहोनी, हो-हो-२ कब क्या घट जाये रे-ऽऽ

गुरूदेव यही वरदान चाहिए

ना हमें जमीं न आसमान चाहिए,
गुलों से भरा न गुलिस्तान चाहिए।
छोड़कर आये हम सारा ये जहान,
गुरू चरणों में स्थान चाहिए॥

चाहतों में सभी लोग जीते हैं यहाँ,
सब कुछ पाके लोग रोते हैं यहाँ।
रब की जो चाहतों से भर दे हमें,
गुरूदेव इतना ही ज्ञान चाहिए॥

आँसू भी छुपा के लोग रोते हैं यहाँ,
कोई आँसुओं से मुख धोते हैं यहाँ।
आँसुओं से नहीं जहाँ कोई वास्ता,
गुरूदेव ऐसा मुक्ति दान चाहिए॥

आती नहीं नींद लोग मजबूर हैं,
दुनिया में ऐसे लोग मशहूर हैं।
जागना हमें भी अब मोह-नींद से,
गुरूदेव यही वरदान चाहिए॥

ज़िंदगी भोगों में हमें जीना नहीं,
भोगों का गरल हमें पीना नहीं।
चेतना को भोगने की लगी है लगन,
गुरूदेव चेतना का दान चाहिए॥

15-10-2004
रामगंजमण्डी

अर्थ का है युग आदमी गुलाम है

अर्थ का है युग आदमी गुलाम है,
अर्थ से सुबह अर्थ में ही शाम है।
भाई-भाई लड़ते हैं अर्थ के लिए,
कोई बना बुश कोई सद्दाम है॥

अर्थ है तो एक दिन बुराई आयेगी,
रिश्तों में एक दिन खटाई आयेगी।
अर्थ के निमित्त मिटीं कई हस्तियाँ,
अर्थ के लिए न ज़िंदगी का दाम है॥

आदमी मशीन हो गया है अर्थ में,
खाना पीना, सुख चैन भूला अर्थ में।
अर्थ की सजती है अर्थी यहाँ,
महावीर प्रभु का यह पैगाम है॥

अर्थ से न काँटे रास्ते में बोइये,
अर्थ के लिए न ज़िंदगी को खोइये।
अर्थ के बिना भी ज़िंदगी का अर्थ है,
जाना जिसने वो महावीर राम है॥

अर्थ के अनर्थ को भी जान लीजिए,
गुरू का कहा भी अब मान लीजिए।
अर्थ देता बैर, घृणा, नरकों का दु:ख,
ऐसे अर्थ को तो दूर से सलाम है॥

15-10-2004
रामगंजमण्डी

चलो निज घर की तलाश कर लें

चलो निज घर की तलाश कर लें,
ज़िंदगी में अपनी प्रकाश भर लें।
चेतना पे छा राह जो मोह का तिमिर,
ज्ञान-ज्योति जला अंधकार हर लें॥

ढूँढ़ने से मिलता ना ज्ञान का चिराग़,
मिलती है राग-द्वेष मोह की ही आग।
राग की जो आग से बचना तुम्हें,
तो निज आत्मा से अनुराग कर लें॥

खुद में खुदा को पहिचान लीजिए,
देह से जुदा जो उसे जान लीजिए।
इसको निहारने से भागते करम,
तो वीतरागता से श्रृंगार कर लें॥

घर में रहे न कभी घर के रहे,
पर घर-घर में ही फिरते रहे।
निज घर में जो तुम्हें रहना है गर,
तो चलो निज घर की बुहारी कर लें॥

घर में रहोगे न भगाये जाओगे,
घर से भागोगे ठोकरे ही खाओगे।
बनना है मालिक तो घर के बनो,
दास जैसी ज़िंदगी का नाश कर लें॥

15-10-2004
रामगंजमण्डी

घर टूटा-फूटा जैसा अपना तो है

चलो निज घर की तलाश कर लें,
ज़िंदगी में अपनी प्रकाश भर लें।
चेतना पे छा राहा जो मोह का तिमिर,
ज्ञानज्योति जला अंधकार हर लें॥

घर तो है घर धार्मशाला नहीं है,
धार्मशाला घर का हवाला नहीं है।
धार्मशाला में गुजारी कई ज़िंदगी,
एक जीस्त घर के भी नाम के लें॥

घर टूटा-ूटा जैसा अपना तो है,
घर भी महल होगा सपना तो है।
सपना भी अपना साकार करेगें,
चलो हम इसका प्रयास कर लें॥

घर में रहेंगे तो आराम करेगें,
भाग-दौड़ छोड़ विश्राम करेंगे।
घर को न छोड़ िर जाना हो कहीं,
ज़िंदगी में ऐसा इंतजाम कर लें॥

घर में जो सुख है वो कहीं नहीं है,
बात अर्हन्त-सिद्धा ने ये कही है।
घर में ख़जाना, कहीं जाना भी नहीं,
पाके ज़िंदगी में उल्लास भर लें॥

घर को ठिकाना अपना बनाइये,
रहने को अब कहीं भी ना जाइये।
घर में न डर है, न खौ है, न भय,
निज घर पे भी विश्वास कर लें॥

नजरों से रब को निहारा कीजिए

नज़रों से रब को निहारा कीजिए,
रब की नज़र का नज़ारा कीजिए।
खुशियाँ मिलेंगी तुम्हें कदम-कदम,
खुद को भी रब सा सम्हारा कीजिए ।

नज़रों से देखा है ये सारा ही जहाँ,
रब जैसा रूप दुनिया में भी कहाँ।
रब है सदा ही राग-दाग से परे,
रब बनना है मन बुहारा कीजिए॥

नज़रों में रब का जो अक्स आ गया,
मुक्ति वधाु को वह शख़्स भा गया।
नज़र में होगा शीघ्र सिद्धाों का शहर,
नज़रों में निज को उतारा कीजिए॥

नज़र न जाये कहीं जर पे कभी,
मिलती है रब जैसी सम्पदा तभी।
खुल जाते हैं रहस्य आत्मा के सब,
संयम से ज़िंदगी सँवारा कीजिए॥

राह में जो मिल जाये यति या यतीम,
बन जाओ धार्मराज, अर्जुन, भीम।
इनकी सेवा से मिलती है वो नज़र,
कि इनमें भी रब का नज़ारा कीजिए॥

15-10-2004
jkexate.Mh

दीप हमें घर में जलाना चाहिए

दीप हमें घर में जलाना चाहिए,
मोह अंधकार को मिटाना चाहिए।
कोई फिर आकर के कुछ भी कहे,
बातों में किसी की नहीं आना चाहिए॥

ठोकरें खाके भी न सँभलते हैं लोग,
चेहरे को अपने बदलते हैं लोग।
चाहते हो ज़िंदगी में खुशियाँ अगर,
तो गीत हमें रब के ही गाना चाहिए॥

दुनियाँ में आकर के तूने क्या किया,
धार्म में जिया है या अधार्म में जिया।
जानता है रब ये हकीकतें सभी,
रब से ना कुछ भी छुपाना चाहिए॥

भूल हो जाना भी गुनाह नहीं है,
भूल अपनाने सा गुनाह नहीं है।
भूल करके न तुम भूलना कभी,
भूल को हृदय से भुलाना चाहिए॥

आँधी और तूफाँ के भी सहेगें सितम,
ज्ञान दीप कभी बुझने न देगें हम।
शूल और शूल से न खुशी न गिला,
वीतरागता ऐसी ही आना चाहिए॥

16-10-2004
jkxate.Mh

गुरूदेव का ही नाम आना चाहिये

दीप हमें घर में जलाना चाहिए,
मोह अंधाकार को मिटाना चाहिए।
कोई फिर आकर के कुछ भी कहे,
बातों में किसी की नहीं आना चाहिए॥

ज़िंदगी है ज़िंदगी गुज़ारा नहीं है,
ज़िंदगी से हमें कोई प्यारा नहीं है।
ज़िंदगी से प्यारा कौन, पूछे गए कोई,
गुरूदेव का ही नाम आना चाहिए॥

गुरू की शरण मिले, मिटे जाये ग़म,
काँटों में भी ज़िंदगी गुजार लेगें हम।
नाश करना है गर आठों ही करम,
मोक्षमार्ग जीवन में आना चाहिए॥

ग़ैर तो है ग़ैर कोई अपने नहीं,
अपने ही सपने भी अपने नहीं।
अपना बनाने की है चाह जो दिले,
तो खुद को ही अपना बनाना चाहिए॥

आईना है पास मुलाकात कर लो,
अपने से अपनी भी बात कर लो।
मिल जाये गर तुम्हें खुद में खुशी,

ज़िंदगी है थोड़ी उपयोग कर लो,
मिट जाये दु:ख उद्योग कर लो।
भोग भोगने से दु:ख मिटते नहीं,
मन को मनाना हमें आना चाहिए॥

16-10-2004
jkxate.Mh

जिन्दगी में कुछ न ईमान चाहिए

ज़िंदगी में कुछ न, ईमान चाहिए,
दिल रहे पाक वरदान चाहिए।
जिसका है नाम ईमान से बड़ा,
वो महावीर राम हनुमान चाहिए॥

बेच दिया जिसने जमीर अपना,
धान को भी पाके वो अमीर न बना।
दुनिया मिले न मिले इसका न गम,
मीरा जैसा हमें सम्मान चाहिए॥

जिसके भी पास ईमान है यहाँ,
धारती पर वह भगवान है यहाँ।
आग में भी जलके वो जलता नहीं
धार्मराज जैसा सत्यवान चाहिए॥

मान में जिये वो बेईमान थे सभी,
रावण और कंस दुर्योधान सभी।
इनका क्या हुआ हस्र जानता जहान,
नहीं इन जैसा अभिमान चाहिए॥

होता हर आदमी ईमान से सुखी,
बेईमान नरकों में होता है दु:खी।
नरकों की वेदना से बचना है गर,
तो ईमान का ही अरमान चाहिए॥

16-10-2004
jkexate.Mh

कर्म से बड़ा न कानून है कोई

सजदा जो रब की न कर पाये हैं,
खाली झोली अपनी न भर पाये हैं।
भीख मांगने वो मजबूर हैं यहाँ,
रब नाम लेके जो न मर पाये हैं ॥

कर्म से बड़ा न कानून है कोई,
धार्म से बड़ा नहीं जुनून है कोई।
सुख-दु:ख कर्म फल भोगते यहाँ,
धार्म करके भी जो न तर पाये हैं॥

भूल के भी रब को जो भूलते नहीं,
दुनिया में रह के वो फूलते नहीं।
रब के इशारे से जो चलते यहाँ,
भोग उन्हें वश में न कर पाये हैं॥

कलियाँ खिलीं जो रब के ख़याल में,
फूल बन हँसती हैं डाल-डाल में।
काँटों को ये देखकर होती है जलन,
दिल में जो रब को न धार पाये हैं॥

रब की उतारें चाँद तारे आरती,
भारती माँ भवोदधिा से उबारती।
नाव उनकी ही मझधाार डूबती,
रब के जो कभी भी न दर आये हैं॥

16-10-2004
jkexate.Mh

बाग नया घर में लगाना चाहिए

बाग नया घर में लगाना चाहिए,
वीतरागता को भी उगाना चाहिए।
खुशबू से महके ये सारा ही जहान,
फूल विश्वास के खिलाना चाहिए॥

फूल को खिलाओगे तो फल पाओगे,
फूल बिना फल भी कहाँ से लाओगे।
मूल बिना फूल नहीं मिलते कभी,
इसलिए मूल को जिलाना चाहिए॥

सूना-सूना लगता है बाग बिना घर,
जल बिना लगे जैसे सूना सरोबर।
जिसने लगाया बाग हुए बाग-बाग,
महावीर जैसा बाग पाना चाहिए॥

कर्म चारों गतियों में पटक रहे,
मूल-फूल गंधा बिन भटक रहे।
चाहते मिटाना गर थकान अपनी,
बाग में ही विश्राम पाना चाहिए॥

फूल की सुगंधा पाके आते पास लोग,
अपनी तपन को मिटाते खास लोग।
रब के शहर में जो जाना हो तुम्हें,
तो सच्ची श्रद्धाा ज्ञान-चरित्र पाना चाहिए।

16-10-2004
jkexate.Mh

राग नहीं अब तो विराग चाहिए

राग नहीं अब तो विराग चाहिए,
आत्मा में होना अनुराग चाहिए।
कर्मों को कर दे जला के ख़ाक जो,
धार्म-शुक्लध्यान रूपी आग चाहिए।

मन की गुलामी न सहेंगे अब हम,
मन के चलाये न चलेंगे अब हम।
तस्वीर प्रभु की बसायेंगे दिले,
डूबने को प्रभु सा प्रयाग चाहिए।

सुख कहीं और न, निजात्मा में है,
शान्ति भी कर्मों के ख़ात्मा में है।
जानना स्वभाव तन-चेतना का गर,
तो भेदविज्ञान का चिराग़ चाहिए।

आत्मा के गीत अब गाये जायेंगे,
आत्मा के गीत अब सुनाये जायेंगे।
सुनने सुनाने का मिटाना भेद गर,
तो शुद्धा-उपयोग का ही राग गाइये।

राग से तो बढ़ता है संसार ही,
दुःख कष्ट पीड़ा वेदना अपार ही।
राग का चिराग़ जो बुझाना है तुम्हें,
तो महावीर जैसा श्रेष्ठ त्याग चाहिए।

17-10-2004
jkexate.Mh

जिंदगी में क्रोधा नहीं आना चाहिये

ज़िंदगी में क्रोधा नहीं आना चाहिए,
क्रोधा में न खुद को जलाना चाहिए।
क्रोधा तो अनर्थों का मुखिया कहा,
क्रोधा में न होश को गँवाना चाहिए।

जहाँ क्रोधा वहाँ बोधा रहता नहीं,
बात महावीर, बुद्धा, राम ने कही।
चाह है अमन की जो दिल में तेरे,
तो क्रोधा जैसी पौधा न उगाना चाहिए।

क्रोधा में न रहती है वाणी मे लगाम,
मर्यादायें भी मर जाती सरे आम।
क्रोधा का ज़हर नहीं पीना तुम्हें गर,
तो मुस्कुराहटों को आजमाना चाहिए।

द्वीपायन मुनि ने किया क्रोधा विकराल,
काँपने लगा शरीर आँखे हुई लाल।
क्रोधा में जला दी द्वारिका भी तत्काल,
ऐसे क्रोधा काल से बचाना चाहिए।

क्रोधा करने से होता महा संताप,
क्रोधा करने के बाद होता पश्चाताप।
क्रोधा में उजड़ जाते घर परिवार,
क्रोधा के पिशाच को मिटाना चाहिए।

क्रोधा करने से खोता जाता विश्वास,
क्रोधा करने से होता आत्मा का नाश।
नरकों के दु:ख से जो बचना तुम्हें,
तो क्रोधा भाव मन में न लाना चाहिए।।

17-10-2004
jkexate.Mh

देह को ना देह के हवाले कीजिए

भोगों में न हाथ अब काले कीजिए,
खुद को हाँ रब के हवाले कीजिए।
भोग-भोगने से बन जाते हैं ज़हर,
हाथ में न कामना के प्याले लीजिए।

चेतना का भोग करो मिटे संताप,
कर्म बंध कटते हैं अपने ही आप।
देह के जो पिंजरे से छूटना तुम्हें,
तो देह को ना देह के हवाले कीजिए।

पाँचों इन्द्रियों के भोग काले नाग हैं
चेतना को ख़ाक करने ये आग हैं।
नाग से या आग से जो बचना तुम्हें,
भोगों को भी त्याग के हवाले कीजिए।

भोग पाने दूसरों को न सताइये,
खुद और दूसरों को न जलाइये।
आत्मा को घाव न मिटा सके अगर,
आत्मा को और न अब छाले दीजिए।

भोग-भोगने से नहीं मिलता है चैन,
चैन खो जाता मन होता है बैचेन।
ज़िंदगी गुजारना है चैन से अगर,
तो चित्त चेतना के भी हवाले कीजिए।

17-10-2004
jkexate.Mh

जियो सदा तुम स्वाभिमान के लिए

मान के लिए न सम्मान के लिए,
जिओ न कभी हाँ अभिमान के लिए।
सम्मान चाहने से मिलता नहीं है,
जिओ सदा तुम स्वाभिमान के लिए।

किसी को है धानपद, भोग की ही
च ा ह ,
मिलते तो वाह, नहीं मिलते तो आह।
दौलत को पाके न गुमान कर तू,
पुण्य से मिली है दौलत दान के लिए।

मान और स्वाभिमान बात है अलग,
जैसे संसार-मोक्षमार्ग है विलग।
स्वाभिमान आत्मा के गौरव की बात,
मान है अहं रसपान के लिए॥

ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल और तन,
;द्धि, तप, मद को भी कर दे दन।
मान करने से कभी मिलता न यश,
मान सदा होता है निदान के लिए।

मान में न ज़िंदगी तू बरबाद कर,
मान को तू छोड़ जीस्त आबाद कर।
मान तो मिलाता है सभी को धूल में,
रावण भी जिया था कभी मान के लिए।

18-10-2004
jkexate.Mh

घृणा हमें दिल से मिटाना चाहिए

घृणा हमें दिल से मिटाना चाहिए,
घृणा का न भाव, मन में लाना चाहिए।
घृणा करने से सदा मिलती है घृणा,
घृणा कर रूह न जलाना चाहिए।

घृणा करने से सुख मिलता नहीं,
घृणा करने से दु:ख मिटता नहीं।
घृणा से उपजता है बैर, क्रोधा, पाप,
घृणा कर पाप न कमाना चाहिए।

घृणा तो घृणा है, घृणा प्रेम नहीं है,
जहाँ घृणा, वहाँ कुशल क्षेम नहीं है।
घृणा के कलंक से बचना तुम्हें,
तो घृणा के न बीज फिर उगाना चाहिए।

छोटा-बड़ा भेद ये कराती है घृणा,
राग-द्वेष भाव मन लाती है घृणा।
चाहते हो प्रेम सब जीवों में अगर,
तो घृणा की अब अर्थी उठाना चाहिए।

घृणा से न रहता है आपस में प्यार,
मिटते संबंधा टूट जाता व्यवहार।
माता-पिता भाई-बहिन छूटते सभी,
ऐसी घृणा भूल से न आना चाहिए।

18-10-2004
jkexate.Mh

रहता है जिसकी जुबाँ पे प्रभु नाम

रहता है जिसकी जुबाँ पे प्रभु नाम,
देवता भी करते हैं उसको प्रणाम।
सीता-अंजना का नाम रहेगा अमर,
दूधा-दूधा, पानी-पानी हुआ इल्ज़ाम।

दुःखों से उबारता है प्रभु का ही नाम,
ज़िंदगी सँवारता है प्रभु का ही नाम।
अपने हृदय में बसा ले प्रभु को,
मौत को भी मारता है प्रभु का ही नाम।

प्रभु नाम लेता न, वो मजबूर है,
या तो रूप के गुरूर में ही चूर है।
धारती पे बोझ कहलाते ऐसे लोग,
सुबह-शाम लेते नहीं है जो प्रभु नाम।

ज़िंदगी तो ऐसे भी हाँ कट जायेगी,
पाप करने में ही सिमट जायेगी।
ज़िंदगी में सुख पाने के विकल्प दो,
प्रभु नाम चुन लो या ऐशो आराम।

प्रभु नाम शूल को भी फूल बना दे,
प्रभु नाम धान को भी धाूल बना दे।
प्रभु नाम जपना है आस्था का काम,
आस्था से मिलता अरिहंत-सिद्धा धााम।

18-10-2004
jkexate.Mh

रोते हुये लोगों को हँसाना चाहिए

रोते हुए लोगों को हँसाना चाहिए,
उनसे भी प्रेम को जताना चाहिए।
मिल जाए राह में गर दुःखी या यतीम,
आत्मीयता का भाव लाना चाहिए।

मानव हो मानवता का काम भी करो,
महावीर, राम को बदनाम न करो।
लोग भी रखेगें तुम्हें सर आँखों पे,
बन के जटायु काम आना चाहिए।

जाने क्या हो गया आज इंसान को,
भूलने लगे हैं आज भगवान को।
इंसान बदला न बदला धारम,
धार्म धयान ज़िंदगी में आना चाहिए।

मौत भी तुम्हें प्रणाम कर जायेगी,
सच कहता हूँ मौत मर जायेगी।
चाहते हो मौत नहीं आए बार-बार,
तो मोक्षमार्ग तुम्हें अपनाना चाहिए।

होवे सब जीवों से ही मित्रता का भाव,
सुखी सब जीव हो, पवित्रता का भाव।
प्रेम को विराट जो बनाना है तुम्हें,
तो प्रभु सा विराट बन जाना चाहिए।

18-10-2004
jkexate.Mh

रब जैसा हमें कोई प्यारा नहीं हैं

रब जैसा हमें कोई प्यारा नहीं है,
रब जैसा कोई भी सहारा नहीं है।
सबको भुलाना हमें मंजूर है,
रब को भुलाना तो गँवारा नहीं है।

रब मेरी ज़िंदगी, रब मेरा मीत,
रब मेरी बंदगी, रब से है प्रीत।
दिखते हैं नभ में भी तारे कई हजार,
रब जैसा कोई भी सितारा नहीं है।

रब के दरश से ही मिटते हैं ग़म,
रब के लिए ही छोड़ी हमने शरम।
मिलें कई नदियाँ, किनारे भी कई,
रब जैसा कोई भी किनारा नहीं है।

रब मेरी ज़िंदगी में खिलता गुलाब,
रब से ही रूह को मिलता शबाब।
बगिया में खिलते हैं ूल भी हजार,
रब जैसे ूल का नज़ारा नहीं है।

सच कहूँ रब से सुबह-ओ शाम,
रब के लिए ही मेरी ज़िंदगी तमाम।
घर द्वार परिवार मिलते बहुत,
रब जैसा कोई घर-द्वार नहीं है।

19-10-2004
jkexate.Mh

वाणी से न राग गीत गाना चाहिए

वाणी से न राग गीत गाना चाहिए,
वीतरागता को ही सुनाना चाहिए।
राग-द्वेष मोह को मिटाना जो तुम्हें,
तो वीतराग मार्ग अपनाना चाहिए।

राग गीत गाने से तो बढ़ता है राग,
वीतरागता का बुझ जाता है चिराग़।
वीतरागता का दीप जलता रहे,
तो राग के ूानों से बचाना चाहिए।

राग के गगन में न उड़ना कभी,
वीतरागता से नहीं मुड़ना कभी।
राग का चमन जो उजाड़ना तुम्हें,
तो वीतरागता को नित्य ध्याना चाहिए।

वीतराग भाव से ही बने महावीर,
वीतराग भाव से ही मिले भवतीर।
वीतरागता का जो खिलाना है कमल,
तो वीतरागता में रम जाना चाहिए।

पाना वीतरागता तो छोड़ दीजे राग,
संयम के जल से धो डालो राग दाग।
राग के अंधेरे को मिटाना जो तुम्हें,
तो आत्मज्ञान सूर्य को उगाना चाहिए।

19-10-2004
jkexate.Mh

मोह नींद अपनी हटाना चाहिए

मोह नींद अपनी हटाना चाहिए,
मौत से न हमें घबराना चाहिए।
हँस के गुजारना है ज़िंदगी अगर,
तो मोक्ष के लिए कदम बढ़ाना चाहिए।

चेतना पे कर्मों का पहरा लगा,
कर्म छलते हैं नया चेहरा लगा।
कर्मों का करना है खात्मा जो गर,
तो आत्मा को आत्मा से ध्याना चाहिए।

साथ कोई आता नहीं जाता नहीं साथ,
साथ बन जाए तो निभाता नहीं साथ।
रिश्ते जो सबको रूलाते हैं यहाँ,
ऐसे रिश्तों को न बनाना चाहिए।

ज़िंदगी है छोटी, नहीं छोटे-मोटे काम,
काम में ही गुजरी है ज़िंदगी तमाम।
मिले न सुकून कभी ज़िंदगी में गर,
तो ऐसी ज़िंदगी में धार्म आना चाहिए।

जाग-जाग-जाग चेतन अब तो तू जाग,
मोह नींद त्याग बन जा तू वीतराग।
भूल जो हुई है उसको तू भूल जा,
भूल को न फिर से दुहराना चाहिए।

19-10-2004

मीरा से पूछो तो घनश्याम चाहिए

मीरा से पूछो तो घनश्याम चाहिए,
तुलसी से पूछो उन्हें राम चाहिये।
हमें तो लगी है एक मोक्ष की लगन,
इसीलिये हमें आतमराम चाहिए॥

नाव से पूछो तो पतवार चाहिये,
माटी से पूछो तो कुम्हार चाहिए।
हमें तो सँवारनी है जीस्त अपनी,
इसीलिये हमें गुरूद्वार चाहिए॥

भँवरों से पूछो उन्हें फूल चाहिए,
नदियों से पूछो उन्हें कूल चाहिए।
पुण्य से मिली है ज़िंदगी मनुष्य की,
हमें ज़िंदगी का मअलूल[1] चाहिए।

अंधों से पूछो उन्हें आँख चाहिये,
पंछियों से पूछो उन्हें पाँख चाहिए
फूल न ज़मीन पर उगते कभी,
फूल को उगाना है तो शाख चाहिए।

उल्लू से पूछो उन्हें रात चाहिये,
चकवी से पूछो तो प्रभात चाहिये।
जड़ देह में न अब रमना हमें,
शुद्धा आत्मा की सौगात चाहिए।

1. निष्कर्ष

19-10-2004

वाणी से न आग लगाना चाहिए

वाणी से न आग लगाना चाहिए,
वाणी में विराग उगाना चाहिए।
चाहता हूँ बोलें सभी भाषा प्रेम की,
वाणी को प्रयाग बनाना चाहिए॥

वाणी कभी-कभी बन जाती जैसे बाण,
बाण हरता न, वाणी हरती है प्राण।
मौन साधाना न होवे वाणी से अगर,
तो वाणी का प्रमाण भी बनाना चाहिए।

वाणी में किसी के होती प्रेम की मिठास,
ग़मगीन ज़िंदगी में भरती उल्लास।
दुनियाँ से हो गया हो प्रेम जो तुम्हें,
तो जिनवाणी, वाणी से सुनाना चाहिए।

द्रोपदी की वाणी से हुआ था महायुद्धा,
कौरवों का वंश मिटा जो था समृद्धा।
धारती भी चीख उठी, काँपा आसमान,
ऐसी वाणी को दुनाना चाहिए॥

हित-मित-प्रिय वाणी आप बोलिये,
प्रभु गीत गाने मुख आप खोलिये।
सत्य धार्म का प्रसार करना अगर,
तो वाणी में भी सत्य धार्म आना चाहिए।।

20-10-2004
jkexate.Mh

आइना

उपकारी को नहीं भुलाना चाहिये

किया उपकार भूल जाना चाहिए,
उपकारी को नहीं भुलाना चाहिए।
महावीर, राम का संदेश है यही,
उपकार भाव दिले आना चाहिए।

उपकार से जटायु धान्य हो गया,
कृतघ्नी मनुष्य भी जघन्य हो गया।
उपकार उन्नति का सोपान है,
उपकार कर खुशी मनाना चाहिए।

उपकार ज़िंदगी में उपहार है,
उपकार बिना जीस्त बेकार है।
यादगार उपहार पाना है तुम्हें,
तो उपकार में ही डूब जाना चाहिए।

उपकार ज़िंदगी में आदर्श हैं,
प्रेम, दया, करूणा का उत्कर्ष है।
उपकार करने से बनते महान,
उपकार को गले लगाना चाहिए॥

उपकार ज़िंदगी में गुलज़ार है,
करते वही जिन्हें गुणों से प्यार है।
सूर्य-चाँद, वृक्ष-नदी इसके ही रूप,
इनसे हमें भी सीख पाना चाहिए।

20-10-2004
jkexate.Mh

मन को भजन में रमाना चाहिए

मन को भजन में रमाना चाहिए,
विषयों से मन को हटाना चाहिए।
मन से है मोक्ष, संसार मन से ,
मन को मिटा के मोक्ष पाना चाहिए।

मन की चपलता भी मशहूर है,
हर आदमी दु:खी है, मजबूर है।
मन की भँवर से निकलना तुम्हें,
तो मन के मिज़ाज को मिटाना चाहिए।

इन्द्रियों के द्वार से भी झाँकता है मन,
अच्छे-बुरे विषयों को ताकता है मन।
मन के दमन की जो चाह है तुम्हें,
तो पंच महागुरू याद आना चाहिए।

किसी को तनाव है, किसी को अवसाद,
मन के है रूप कई हर्ष व विषाद।
मन का तनाव जो मिटाना है तुम्हें,
तो रोते हुए लोगों को हँसाना चाहिए।

मन से ही पुण्य, मन से ही पाप है,
मन से ही सुख, मन से ही ताप है।
मन को मिटाने की जो चाह है अगर,
तो आत्मध्यान में ही डूब जाना चाहिए।

स्वाधयाय करने से रूकता है मन,
विषयों को तजने से झुकता है मन।
मन को अगर समझाना है तुम्हें,
तो भव, तन भोग से भय खाना चाहिए।

20-10-2004
jkexate.Mh

दुनियाँ में अच्छे-बुरे लोग हैं यहाँ

दुनियाँ में अच्छे-बुरे लोग हैं यहाँ,
पूर्वकृत कर्म से संयोग हैं यहाँ।
साथी कभी कोई भी नहीं है किसी
क । ,
आज संयोग, कल वियोग हैं यहाँ।

महावीर, राम, हनुमान भी हुए,
कंस, रावण जैसे बलवान भी हुए।
कोई गए मोक्ष, कोई गए हैं नरक,
अपने-अपने कर्मों के नियोग हैं यहाँ।

कोई यहाँ आके हँस-हँस के जिये,
कोई यहाँ आके घुट-घुट के जिये।
किसी ने त्यागा है राज्य घर-परिवार,
तृष्णा के रोगी कई लोग हैं यहाँ।

कोई सदाचार से बिताते ज़िंदगी,
कोई दुराचार में गँवाते ज़िंदगी।
कर जाओगे जो वही फल पाओगे,
शुभाशुभ कर्म के उद्योग हैं यहाँ।

धारम करोगे जीस्त खिल जायेगी,
आत्मा की सुख निधि मिल जायेगी।
महावीर जैसे जग से विदाई के,
धारम को पाके ही सुयोग हैं यहाँ।

हो सके तो सबकी भलाई कर ले,
काम आए पुण्य की कमाई कर ले।
तीर्थेश जैसा यश फैले लोक में,
ऐसे धार्म-ध्यान के प्रयोग हैं यहाँ।

20-10-2004
jkexate.Mh

गुरूदेव भूल को सुधारते हो तुम

गुरूदेव भूल को सुधारते हो तुम,
भव सागर से तारते हो तुम।
ज़िंदगी हमारी उलझनों से है भरी,
हर उलझन को निवारते हो तुम।

मेरा सौभाग्य गुरू आप जो मिले,
आपके दरश से ही पाप जो धुले।
हम हैं पाषाण, खा रहे थे ठोकरें,
प्रभु की मूरत में सम्हारते हो तुम।

सच कहता हूँ, ज़िंदगी बदल गई,
अंधों को जैसे रोशनी ही मिल गई।
ज़िंदगी में आये चाहे आँधी-तूान,
हँसते हो, किंतु नहीं हारते हो तुम।

आस्था का दीप मैं जलाता रहूँगा,
कदम-कदम पे बुलाता रहूँगा।,
भटक न जायें हम राह में कहीं,
करूणा की दृष्टि से निहारते हो तुम।

गुरू का रहेगा नाम जग में अमर,
देता है जो भव्यों को रोशनी प्रखर।
चलते हो राह पे चलाते हो हमें,
वात्सल्य भाव से दुलारते हो तुम।

मेरे सपनों की तस्वीर आप हो,
सच कहता हूँ महावीर आप हो।
सच्ची मित्रता सिखाई आपने हमें,
समता ही ज़िंदगी में धारते हो तुम।

21-10-2004
jkeate.Mh

हाथ सब मिलाते हैं, मिलाते नहीं दिल

हाव सब मिलाते हैं, मिलाते नहीं दिल,
नाव सब चलाते नहीं मिलते साहिल।
कौन समझाए अब जाकर इन्हें,
राह में जो बैठे हैं बने हैं काहिल।

थोड़ी से कषाय भी बढ़ाती संसार,
बनना कषाय का ही िर संस्कार।
छूटने से भी कषाय छूटती नहीं,
धर्म के भी रहते नहीं हैं काबिल।

दुनिया में आए वृक्ष भी लगाओगे,
कर्म वृक्ष रोपोगे न बच पाओगे।
वृक्ष का चुनाव अब करना है तुम्हें,
कोई देता शूल, कोई देता है गुल।

भाव कुछ ऐसे भी बनाना चाहिए,
बैर को बुराई को मिटाना चाहिए।
जिनका है पाक दिल वहीं है खुदा,
सच कहूँ धर्म के वही हैं काबिल।

बादशाह होके भी गुलाम हो रहे,
भोगों के दीवाने सरे आम हो रहे।
चाह जन्नत की, जहन्नुम के काम,
अपनी की रूह के बने हैं कातिल।

अब बस एक बात मेरी मानिए,
दुनियाँ को नहीं खुद को भी जानिए।
लक्ष्य को बना के चलते हैं जो यहाँ,
उनके लिए न दूर होती मंज़िल।

21-10-2004
jkeate.Mh

दूसरों को शूल अब न चुभोइये

दूसरों को शूल अब न चुभोइये,
काँटे अपनी ही राह में न बोइये।
कर्म का उसूल है जो दोगे पाओगे,
खुशी बाँटने के भाव भी सँजोइये।

स्वार्थ में मनुष्य उन्मत्त हो रहा,
स्वार्थ के लिए ही आज सत्य खो रहा।
स्वार्थ में जीने से मिलता न सुख
क भ ी ,
स्वार्थ में न अपना विवेक खोइये।

दूसरों को पीड़ा देकर हँसना नहीं,
दूसरों के सुख में सिसकना नहीं।
चेहरे की कालिमा मिटाना है तुम्हें,
तो जल के छींटे लगा के मुख धोइये।

दुनिया में उस सा नसीब न कोई,
उस जैसा प्रभु के करीब न कोई।
राह में उठा के शूल जो बिछा दे फूल,
ऐसे इन्सान आप भी तो होइये॥

खुशी बाँटने से ही तो मिटता है ग़म,
मिलती है, खुशियाँ भी कदम-कदम।
इसलिए इज़हार खुशी का करो,
रब जैसी खुशी पाने बीज बोइये।

21-10-2004
jkxate.Mh

दुनियाँ में आया है तो जाना पड़ेगा

दुनियाँ में आया है तो जाना पड़ेगा,
डेरा एक दिन तो उठाना पड़ेगा।
चाहे कोई राजा हो या रंक हो यहाँ,
मौत को भी गले तो लगाना पड़ेगा।

चक्री-अद्धचक्री-बदभद्र हो कोई,
तीर्थेश जैसा भी सुभद्र हो कोई।
इन्द्र का भी इन्द्रपना स्थिर नहीं,
जाने का दस्तूर तो निभाना पड़ेगा।

राजभोग पाकर न फूलिये यहाँ,
मौत कभी आयेगी न भूलिये यहाँ।
फूलना व भूलना ही भूल है बड़ी,
भूल को भी एक दिन भुलाना पड़ेगा।

भले तू बना ले रिश्ते-नाते भी यहाँ,
साथ नहीं कोई भी निभाते हैं यहाँ।
परिवार का है साथ शमशान तक,
अकेला यहाँ से तुम्हें जाना पड़ेगा।

माटी का है तन माटी में समायेगा,
कोई जलायेगा कोई दफनायेगा।
देह पिंजरे में चेतन पंछी कैद है,
पिंजरे को छोड़ उड़ जाना पड़ेगा।

छोटी ज़िंदगी में यूँ लड़ते हो क्यों,
धान वा जमीन को झगड़ते हो क्यों।
साथ किसके क्या गया सोचो तो ज़रा,
ठाठ-बाट छोड़ सब जाना पड़ेगा।

साथ लेके गया कर्म तू अनेक बार,
धार्म को भी साथ लेके जा तू एक
ब ा र ।
कर्म को मिटाना जड़मूल से अगर,
तो धार्म की शरण में ही जाना पड़ेगा।

22-10-2004
jkxate.Mh

हर्ष में जिओ या संघर्ष में जिओ

हर्ष में जिओ या संघर्ष में जिओ,
शुद्धा आत्मा के ही विमर्श में जिओ।
काटना है कर्मों की बेड़ियाँ अगर,
तो भेदज्ञान के ही उत्कर्ष में जिओ।

जीने को तो दुनियाँ में जीते हैं सभी,
भोग-विषयों का विष पीते हैं सभी।
भोग-रोग से निरोग होना है अगर,
तो निजआत्मा के आमर्श में जिओ।

सोना जैसे शुद्धा सोना होता तप से,
वैसे आत्मा विशुद्धा होता तप से।
तप से प्रखरता जो पाना है अगर,
तो गुरूदेव के ही परामर्श में जिओ।

शुद्धा-बुद्धा ज्ञायक स्वरूप आत्मा,
अस्पर्श, अरस, अगंधा, अरूप आत्मा।
पर का न लेश, न क्लेश है जहाँ,
हूँ स्वतंत्र, पूर्ण, अस्पर्श में जिओ।

चाह धार्म-धयान, शुक्ल-धयान की
र ह ,
भावना भी एक आत्मज्ञान की रहे।
घातिया-अघातिया का नाश कर दूँ,
सिद्धा बन जाऊँ निष्कर्ष में जिओ।

काँटों में भी राह को बनाना चाहिए

काँटो में भी राह को बनाना चाहिए,
खुद चलो औरों को चलाना चाहिए।
महावीर ने दिखाई राह जो हमें,
उसे नहीं दिल से भुलाना चाहिए।

ज़िंदगी में सबके ही आती मुश्किलें,
हँस के गले लगाये प्रेम से मिलें।
सोना तपकर ही निखरता सुनो,
मुश्किलों में नहीं घबराना चाहिए।

ज़िंदगी का दूजा नाम संघर्ष है,
सीता, अंजना की जीस्त आदर्श है।
काँटों पे भी चलते गुजारी ज़िंदगी,
इनसे भी कुछ सीख पाना चाहिए।

रावण की राह ऊलों से थी सजी,
ज़िंदगी में उसके थी, खुदगर्जी।
ऐसे-ऐसे महाबली धूल में मिले,
ऊलों में न यूँ इठलाना चाहिए॥

दु:ख में मनाते लोग यहाँ मातम,
सुख में दिखाई नहीं देता आतम।
सुख-दु:ख हो समान मिले आत्मा,
श्रद्धान ऐसा भी बनाना चाहिए।

22-10-2004
jkxate.Mh

खोजने से कभी मिलते नहीं गुरू

खोजने से कभी मिलते नहीं गुरू,
शिष्य बन जाओ मिल जायेंगे गुरू।
शिष्यता को खोजना ही गुरू से मिलन

गुरू को हृदय से चुन लीजिए,
जिनवाणी कहती है सुन लीजिए।
गुरू है पवित्र गंगा का ही सलिल,
मिथ्यामल धोके करो जीवन शुरू।

गुरू साथि हों तो नहीं कर्मों का डर,
परमात्मा की देते गुरू ही ख़बर।
आस्था का दीप गर जलता रहे,
तो ज्ञान का प्रकाश भर देते हैं गुरू।

गुरू बिना राम, महावीर न मिले,
गुरू बिन प्रभु बेनज़ीर[1] न मिले।
अब और कुछ भी न चाहिए हमें,
चलना है जिस राह चले हैं गुरू।

गुरू गोविन्द में महान हैं गुरू,
गोविन्द की तो पहचान हैं गुरू।
गुरू की नज़र मिल जायेगी जिसे,
सच कहूँ वो भी बन जायेगा गुरू।

1. अनुपम

23-10-2004
jkxate.Mh

नज़र झुके वो कभी काम न करो

नज़र झुके वो कभी काम न करो,
धार्म को कभी भी बदनाम न करो।
सह लेना कष्ट महावीर की तरह,
हृदय दु:खे वो कभी काम न करो।

माता की, पिता की आज्ञा करो स्वीकार,
गुरू की विनय करो, बनो भी उदार।
इससे ही मिलता है, दुनियाँ में यश,
यश को मिटाने वाले काम न करो।

सेवा की हो भावना हृदय में सदा,
दुर्भावनायें हों हृदय से विदा।
गुण गाओ और गुणवान भी बनो,
गुण को गँवाने वाले काम न करो।

हिंसा, झूठ, चोरी के भाव न करे,
परिग्रह, कुशील जैसे पाप न करें।
पाप करने से होती आत्मा पतित,
रूह को गिराने वाले काम न करो।

निंदा, झूठ, चुगली से दूर ही रहे,
अपशब्द कोई भी न मुख से कहें।
मीठी वाणी बोलने का अभ्यास हो,
खोटे वचनों का सम्मान न करो।

क्रोधा, मान, माया, लोभ, कषाय हैं
ब ु र ी ,
भव के भ्रमण में बनी हैं ये धुरी।
छोड़िये कषाय सीखियेगा समभाव,

समता को खोने वाले काम न करो।

गिरते हुये को और न गिराइये

गिरते हुये को और न गिराइये,
मिटते हुए को और न मिटाइये।
दुःखी हो, यतीम हो, अनाथ हो कोई,
करूणा का भाव दिल में जगाइये।

धान को कमा के धानवान हो गए,
दो, चार, छह नये मकान हो गए।
फिर भी न ज़िंदगी में सुख चैन है,
पाना सुख चैन तृष्णा घटाइये॥

खिले हैं जो फूल साँझ मुरझायेंगे,
संदेश सबको ही दे जायेंगे।
जो भी यहाँ आता, उसे जाना भी यहाँ,
राम जैसे काम कुछ कर जाइये।

सोचो अपना भी दूसरों का भी भला,
अपने लिए न काटो ग़ैर का गला।
दूसरों को दुःख देना ही अधार्म है,
दुःख को मिटाने का भी भाव लाइये।

सच कहूँ दुनिया में इंसान कम,
इंसान छद्मभेषी मिलें हरदम।
इंसान वो जो करे इंसाँ से प्यार,
देख के यतीम को गले लगाइये।

23-10-2004
jkexate.Mh

कश्ती न हमको डुबोना है यहाँ

कश्ती न हमको डुबोना है यहाँ,
मानव का भव नहीं खोना है यहाँ।
भगवान वही बनता है जिसका,
रत्नत्रय ही बिछौना है यहाँ॥

पंच परावर्तन संसार है,
संसार में तो कुछ भी न सार है।
सार मिलता है उसे जिसका भी दिल,
पंच महागुरू को ठोना है यहाँ॥

कल-कल-कल में खोया है समय,
ज़िंदगी हो गई है कल-कलमय।
कल-कल में न और जीना हमको,
मोह की न नींद अब सोना है यहाँ।

आत्मा हूँ, आत्मा को पाना है हमें,
संकल्प अपना निभाना है हमें।
पुरूषार्थ करना स्वभाव के लिए,
कर्मों का रोना नहीं रोना है यहाँ।

निज सत्ता का जिसे मान हो गया,
सच कहता हूँ भेदज्ञान हो गया।
शुद्धा-बुद्धा-निर्विकार-निज आत्मा
शुद्धा-चिद्रूपमय होना है यहाँ॥

24-10-2004
jkexate.Mh

शुभ काम करने में सोचा न करो

शुभ काम करने में सोचा न करो,
शुचिता को वरने में सोचा न करो।
हो सके अशुभ काम करो ने कभी,
धार्म-घ्यान करने में सोचा न करो॥

आज लोग सोचने से परेशान हैं,
जब देखो सोच-सोच हैरान हैं।
सोचने से मिलती न मंजिल कभी,
राह पर चलने में सोचा न करो॥

सच्ची श्रद्धाा ज्ञान व चरित्र चाहिए,
मन-वच-काय से पवित्र चाहिए।
निज घट में ही मिल जायेगा प्रभु,
अज्ञान हरने में सोचा न करो॥

दूसरों को ही सुधाारने में लगे लोग,
दूसरों को ही सुधाारने का लगा रोग।
खुद को सुधाारो कहता यही खुदा,
खुद को सुधाारने में सोचा न करो॥

नाम के लिए न कमी काम के लिए,
जीना है तो जिओ आतमराम के लिए।
आत्मा सी संपदा न जग में कोई,
आत्मा को वरने में सोचा न करो॥

25-10-2004
jkexate.Mh

सोते हुए लोगों को जगाना चाहिए

सोते हुए लोगों को जगाना चाहिए,
आलस्य उनका हटाना चाहिए।
मोहनींद तोड़ने को राजा न हों गर,
तो संयम के छींटे भी लगाना चाहिए॥

सोते-सोते ज़िंदगी गुज़ारते हैं लोग,
मौत जब आती है कराहते हैं लोग।
सोते हुए स्वप्न नये देखते यहाँ,
स्वप्न होते सच ना बताना चाहिए॥

रावण ने सोते-सोते किये बुरे काम,
इसलिए उसको मिला भी नरकधााम।
जागने से निर्वाण पाया राम ने,
जागरण के फ़ायदे बताना चाहिए॥

सोते हुए लोगों से ही चले संसार,
जागते ही लगे संसार भी असार।
जागते ही इन्द्रभूति बना गणधार,
इन्द्र की भी भूमिका निभाना चाहिए॥

नींद में जो नींद की ही गोली खा रहे,
नींद के लिए जो दिल से बुला रहे।
नींद है हलाहल कालकूट विष,
नींद में ही नहीं मर जाना चाहिए॥

27-10-2004
jkexate.Mh

माँगन से कभी कुछ मिलता नहीं

माँगने से कभी कुछ मिलता नहीं,
पाप कर्म का विपाक गलता नहीं।
प्रभु नाम जप ले तू शुद्धा भाव से,
बिन माँगे सब कुछ मिलता यहीं।

चाह उसकी हो, जो न हो कभी जुदा,
राह उसकी हो, जिससे मिले खुदा।
धार्म करने के लिए पुण्य चाहिए,
दीप कभी बाती बिना जलता नहीं।

छोड़िए प्रमाद कुछ काम कीजिए,
गम भरी ज़िंदगी की शाम कीजिए।
धार्म से ही कर्म का उजड़ता चमन,
हवा बिना पत्ता कभी हिलता नहीं।

कोई खा के ठाकरें सुधारते यहाँ,
कोई सुधारे बिना ही मरते यहाँ।
आना और जाना तो लगा ही रहेगा,
पत्थरों पे ूल कभी खिलता नहीं।

परमात्मा को पाने प्यास चाहिए,
श्रद्धाा, भक्ति, धौर्य, विश्वास चाहिए।
मौत से जो डरते हैं कदम-कदम,
सच्चा मीत उन्हें कभी मिलता नहीं।

05-11-2004
jkexate.Mh

छल कभी दिल में न लाना चाहिए

छल कभी दिल में न लाना चाहिए,
छल कर पाप ना कमाना चाहिए।
रावण का छल उसे ले गया नरक,
भोगों में न छल आजमाना चाहिए।

छल ज़िंदगी में सबसे बड़ा गुनाह,
छल से न मिले कभी धार्म की पनाह।
छल से छलकते हैं आँसु कई जनम,
छल कर हर्ष न मनाना चाहिए॥

छल कर जोड़ो चाहे माया कितनी,
मौत छीन लेगी, सुनो बात इतनी।
तिनका भी साथ नहीं जाता किसी के,
छल छोड़ने का भाव आना चाहिए।

छल करने से खो जाता विश्वास,
छलिया का सााि न दे घर का भी
ख ा ा स ।
छल करके न करो ज़िंदगी तबाह,
छल को हाँ दिल से भुलाना चाहिए।

छल तो है छल, छल, धार्म नहीं है,
छल जैसा कोई भी अधार्म नहीं है।
छल करने से कभी मिलता न सुख,
छल के न गीत कभी गाना चाहिए।

07-11-2004
jkexate.Mh

आत्मा को पाने आत्मधार्म चाहिये

धार्म चाहिए, हाँ अब धार्म चाहिए,
धार्म के सिवा न कोई कर्म चाहिए।
धार्म से ही सबकी बनी है तक़दीर,
ऐसा जीता जागता ही धार्म चाहिए।

धार्म के बिना ही संसार में रूला,
धार्म के बिना ही धार्म से रही गिला।
धार्म बिना ज़िंदगी गँवा दी व्यर्थ ही,
ज़िंदगी बनाने अब धार्म चाहिए॥

देव, शास्त्र, गुरू श्रद्धाान करूँगा,
आत्मा हूँ, आत्मा का ज्ञान करूँगा।
शुद्धा-बुद्धा, एक ज्ञायक स्वरूप हूँ
आत्मा को पाने आत्मधार्म चाहिए।

धार्म करने से मिलते हैं सभी सुख,
धार्म करने से मिटते हैं सभी दुःख।
धार्म के लिए ही जान हो जहान हो,
सब कुछ छोड़, पाना धार्म चाहिए।

तीनों लोकों में है सच्ची धार्म ही
श रा ण ा ,
धार्म की शरण देती समाधिामरण।
धार्म से ही मिटती है कर्म की निशा,
धार्म पाने छोड़ देना शर्म चाहिए।

08-11-2004
jkxate.Mh

लक्ष्य हमें अपना बनाना चाहिये

लक्ष्य हमें अपना बनाना चाहिये,
लक्ष्य पे भी चल के दिखाना चाहिये।
लक्ष्य से ही मिलती है मंज़िल सदा,
लक्ष्य नहीं दिल से भुलाना चाहिए।

लक्ष्य के बिना तो चलना पि+जूल है,
लक्ष्य बिना राह बदलना भी भूल है।
लक्ष्य मिल गया है जो बढ़ते चलो,
महावीर बन के दिखाना चाहिए॥

लक्ष्य कभी अशुभ बनाना नहीं है,
लक्ष्य में अर्धाम कभी लाना नहीं है।
शुभ लक्ष्य स्वर्ग, अशुभ लक्ष्य है नरक,
शुद्धा लक्ष्य भावों में बसाना चाहिए।

लक्ष्य है तो साधाना भी होती है सफल,
लक्ष्यहीन साधाना होती निष्फल।
दुःख को मिटाना सुख पाना है अगर,
तो लक्ष्य मोक्षमार्ग का बनाना चाहिए।

सरिता भी बहती है लक्ष्य के लिए,
बढ़े चलो कहती है लक्ष्य के लिए।
कभी न कभी तो होगा सागर से
म ल न ,
संकटों से नहीं घबराना चाहिए॥

09-11-2004
jkxate.Mh

ईर्ष्या में दिल न जलाना चाहिये

ईर्ष्या में दिल न जलाना चाहिए,
ईर्ष्या को दिल से भुलाना चाहिए।
ईर्ष्या उगाती है दु:ख की फसल,
ईर्ष्या से खुद को बचाना चाहिए।

ईर्ष्या से होता सदा ज्ञान का विनाश,
ईर्ष्या से होता अज्ञान का विकास,
ईर्ष्या में रहती न बुद्धि न विवेक,
ईर्ष्या की आग न लगाना चाहिए।

ईर्ष्या जहाँ है वहाँ सुख नहीं है,
ईर्ष्या जहाँ है सच दु:ख वहीं है।
ईर्ष्या से होता सदा धार्म का पतन,
ईर्ष्या में धार्म न गँवाना चाहिए॥

ईर्ष्या में रिश्ते भी टूट जाते हैं,
अपनों से अपने भी छूट जाते हैं।
ईर्ष्या बढ़ाती सदा आपसी विरोधा,
ईर्ष्या को जड़ से मिटाना चाहिये।

ईर्ष्या में होता रहता है संताप,
ईर्ष्या में होता रहता है सदा पाप।
ईर्ष्या है मन की महा विकृति,
ईर्ष्या के दाग को हटाना चाहिए।

एकता के गीत नहीं गाना है हमें

एकता के गीत नहीं गाना है हमें,
एकता के गीत न सुनाना है हमें,
एकता की हो गई है बातें अब बहुत,
एकता को करके दिखाना है हमें।

एकता जहाँ हो वहाँ रहती बहार,
एकता जहाँ हो वहाँ शान्ति अपार।
एकता में रहता न बैर, न घृणा,
एकता का ध्वज फहराना है हमें॥

नाव-पतवार की है एकता मिशाल,
तिरता समुद्र होवे कितना विशाल।
खिल जायें सबे ही हृदय कमल,
एकता का सूर्य चमकाना है हमें।

एक-एक मिल के ही बनता समाज,
एक-एक स्वर मिले बनता है साज।
एकता पे करती है दुनिया भी नाज,
एकता का चमन खिलाना है हमें।

एकता है घर में तो स्वर्ग जैसा घर,
एकता नहीं तो कुत्तों का है शहर।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित एकता है ध
ा म ,
यही सद्धार्म अपनाना है हमें॥

देह-आत्मा में भेदज्ञान करिये

अर्हन्त देशना का पान करिये,
देह-आत्मा में भेदज्ञान करिये।
राग-द्वेष छोड़ वीतरागी बनो तुम,
आठों कर्मों का अवसान करिये॥

अच्छा-बुरा किया वही साथ जायेगा,
पुण्य हँसायेगा पाप तो रूलायेगा।
चाहते हो ज़िंदगी में रोना न पड़े,
तो अर्हंत प्रभु का ही धयान करिये।

घातिया को घात अर्हन्त जो बने,
अर्हन्त मार्ग पाने सन्त जो बने।
अर्हन्त-सिद्धा-सन्त भगवन्त जो,
हृदय में लाके मुक्ति-गान करिये।

दुनिया में कौन है जो साथ निभाये,
साथ आये और साथ-साथ जाये।
आना-जाना अकेला उसूल है यहाँ,
रिश्तों की सही पहिचान करिये॥

समझा रही है हमें जिनवाणी माँ,
''धार्म की शरण' कहे कल्याणी माँ।
चारों गतियों के दुःख मेंटना अगर,
तो सच्ची श्रद्धाा का आहवान करिये।

दुःख को मिटाना चाहता है आदमी

दुःख को मिटाना चाहता है आदमी,
सुख को ही पाना चाहता है आदमी।
दुःख को मिटाने बने मन्दिर यहाँ,
मंदिर नहीं जाना चाहता है आदमी।

मन्दिरों में जाते भक्त लोग रोज़-रोज़
अभिषेक पूजा करते हैं रोज़-रोज़।
मन को बनाया नहीं मन्दिर कभी,
आत्मा को पाना चाहता है आदमी।

हम हैं दुःखी ये सब लोग कहते,
दुःख से सदा ही अनभिज्ञ रहते।
दुःख जाने बिना दुःख छूटता नहीं,
दुःख को भुलाना चाहता है आदमी।

सुख की भी चाह लोग करते यहाँ,
सच्चा सुख पाने से डरते यहाँ।
भोग विषयों का सुख, दुःख के लिए,
इसे न भुलाना चाहता है आदमी।

सुख खोजने से कभी मिलता नहीं,
बीज में ही पुष्प कभी खिलता नहीं।
खुद में डूबोगे गर, सुख पाओगे,
पर में नहाना चाहता है आदमी॥

मौत जैसा मित्र नहीं मिल पायेगा

मौत जैसा मित्र नहीं मिल पायेगा,
मौत सा चरित्र नहीं मिल पायेगा।
मौत का करे जो स्वागत हँस के यहाँ,
उन्हें मौत का न पत्र मिल पायेगा।

मौत बिना मिले नहीं नई ज़िंदगी,
ज़िंदगी में मिले नहीं कभी बंदगी।
जानते हैं मौत को यहाँ पे हर कोई,
मौत बिना चादर न सिल पायेगा।

मौत का न नियत ठिकाना है यहाँ,
तो भी हर घर पहिचाना है यहाँ।
दबे-दबे पाँव मौत आती है यहाँ,
मौत बिना घर न बदल पायेगा॥

मौत नाम दुनिया में रहता अमर,
सफ़-सुथरी है यहाँ मौत की डगर।
खुद से खुदा से छल चल जायेगा,
मौत से न छल कभी चल पायेगा।

मौत का रहस्य जो जानते यहाँ,
देव-शास्त्र-गुरू को मानते यहाँ।
मौत से वो डरते नहीं, भागते नहीं,
मौत बिना जीवन न खिल पायेगा।

25-11-2004
jkexate.Mh

ज़िंदगी को जीना है तो हँस के जिओ

ज़िंदगी को जीना है तो हँस के जिओ,
सबके ही दिल में बस के जिओ।
मिट जाये सबके ही दिल की तपन,
बादलों की तरह बरस के जिओ।

राम भी हँसे थे, महावीर भी हँसे,
मीरा, श्याम, तुलसी, कबीर भी हँसे।
इन्हें देख-देख हँसा सारा ये जहाँ,
ज़िंदगी को इनके परश से जिओ।

हँसते हैं गुल यहाँ हँसे गुलशन,
हँसता है चाँद सूर्य हँसती किरण।
हँसती है नदियाँ, हँसता शिखर,
हँसती प्रकृति संग हँस के जिओ।

कभी दूसरों पे तुम हँसना नहीं,
पर की हँसी में तुम फँसना नहीं।
दीन पे हँसोगे होगी खुद की हँसी,
अपने प्रभु के संग हँस के जिओ।

ज़िंदगी में रोते हैं जो मज़बूर है,
अपने खुदा की खुशियों से दूर हैं।
संकटों में भी न रोई सीता-अंजना,
अपने ही कर्मों पे हँस के जिओ।

25-11-2004
jkexate.Mh

काँटों की न कभी परवाह कीजिए

काँटों की न कभी परवाह कीजिए,
ूलों पे ही अपनी निगाह कीजिए।
दिल में है चाह एक जन्नत की गर,
तो सच्चे गुरूदेव की पनाह लीजिए।

राह में मिलेगें कहीं शूल कहीं ूल,
प्रेम से बना लो सबको ही अनुकूल।
राग-द्वेष त्याग वीतराग जो बने,
महावीर-राम की ही राह लीजिए।

लहरों ने कब विश्राम है किया,
चलती ही रहीं, आराम न किया।
चाहते हो राम से मिलना अगर,
मौज़ जैसी साहिल की चाह कीजिए।

दीप संकल्प का जलाना है हमें,
अंधोरा विकल्प का हटाना है हमें।
ज्ञान रोशनी से जगमगाये आत्मा,
तो सुन जिनवाणी वाह-वाह कीजिए।

चलने से जो कभी डरते नहीं,
शूल उनका भी कुछ करते नहीं।
मंज़िल भी दूर नहीं उनके लिए,
सुख पाने सुख को तबाह कीजिए।

26-11-2004
jkexate.Mh